भीष्म साहनी के उपन्यासों में 'तमस' उपन्यास का वैशिष्ट्य

डॉ0 आमोद कुमार*

हिन्दी की कतिपय विधाओं पर अपनी तूलिका चलानेवाले, मार्क्सवादी विचारधारा के लेखक भीष्म साहनी के सभी उपन्यासों की अपनी भिन्न–भिन्न विशेषताएँ हैं, मगर 'तमस' उपन्यास अपने वैशिष्ट्य के कारण बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सन् 1973 ई0 में जब इस उपन्यास का प्रथम संस्करण निकला तो हिन्दी–साहित्य–जगत में एक अजब–सी हलचल मच गयी।

स्वातंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् भी भारत 'अँधेरे' में रहा और आज भी है। ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है कि इस देश में साम्प्रदायिकता का तमस आज भी व्याप्त है।

समय–विस्तार की दृष्टि से इस उपन्यास में मात्र पाँच दिनों की ही कथा कही गयी है, मगर सच तो यह है कि यह कथा केवल पाँच दिनों की ही नहीं, अपितु इक्कीसवीं सदी के हिन्दुस्तान के अबतक की लगभग सौ वर्षों की कथा हो सकती है। कहना न होगा कि 'यह उपन्यास जाति–प्रेम, धर्म, संस्कृति, परम्परा, इतिहास और राजनीति जैसी संकल्पनाओं की आड़ में शिकार खेलनेवाली शक्तियों के दुःसाहस भरे जोखिमों को खुले तौर पर प्रस्तुत करता है। साथ ही इन जोखिमों की पीठिका में छिपे दुराशयों से आगाह करता हुआ यह सुझाव भी देता है कि अर्थवान संकल्पनाओं और उनमें निहित सदाशयों को इस तत्परता और आतुरता के साथ आत्मसात् करना जरूरी है कि उन संकल्पनाओं के नकारात्मक पहलुओं में निहित अनर्थकारी मंतव्यों से खबरदार रहा जाय।'[1] उपन्यास का आरंभ नत्थू चमार द्वारा मारे गये एक सूअर से होता है। मुरादअली नामक एक व्यक्ति नत्थू को पाँच रुपये का एक नोट देते हुए कहता है–'हमारे सालोत्तरी साहब को एक मरा हुआ, सूअर चाहिए। इधर पिगरी के सूअर बहुत घूमते हैं। एक सूअर को इधर कोठरी के अन्दर कर लो, और काट डालो।'[2] यह कार्य कौन करता है, इसका भेद बाद में खुलता है। मस्जिद के द्वार पर उस सूअर को देखकर मुसलमान लोग भड़क उठते हैं जिसके प्रतिक्रिया–स्वरूप मुसलमानों द्वारा एक गाय को काटा जाता है जिससे हिन्दू लोग क्रोधित और उत्तेजित हो उठते हैं। इस घटना की खबर शहर, कस्बे से लेकर गाँव

***बी0 एड0, एम0 ए0 (हिन्दी),पी–एच0 डी0**

तक प्रसारित हो जाती है। फलतः हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भयंकर साम्प्रदायिक दंगा हो जाता है जिसमें दोनों ही पक्ष के बहुत से लोग मारे जाते हैं। यह अमानवीय खून–खराबा और नर–संहार बड़ा ही उग्र रूप धारण कर लेता है। इस जातीय दंगे को भीष्म साहनी ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से पर्त–दर–पर्त उघाड़ने की चेष्टा की है। हिन्दू और मुसलमान जाति और धर्म के मामले में इतने कट्टर हो सकते हैं, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। कट्टर हिन्दूवाद का बखिया उघाड़ते हुए भीष्म साहनी कहते हैं–'युवकों को तेल खौलाने के लिए कड़ाही नहीं मिल रही थी। खिड़की के दासे पर तीन चाकू, एक छुरा, एक छोटी–सी किरपान साथ–साथ जोड़कर रख दिए गए थे। कमरे के कोने में दस लाठियाँ रखी थी, इत्यादि– ।'[3]

भीष्म साहनी ने इन दृश्यों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है, मानों दंगे में घृणा का पात्र प्रायः गरीब बनते हैं चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान। जब धनी हिन्दू–मुसलमान एक–दूसरे से मिलते हैं तो उनमें शिष्टता, शालीनता और आदमीय दिखाई पड़ती है और वे दोस्ताना अन्दाज में एक–दूसरे से बातें करते हैं। यह छद्म व्यक्तित्व ही वास्तव में समाज के अन्तर्गत झगड़े–फसाद की जड़ है। दीक्षा–प्रसंग का वर्णन करने के क्रम में यह दर्शाया है कि देवव्रत से दीक्षित होकर एक भोला–भाला व्यक्ति रणवीर किस प्रकार एक नृशंस हत्यारा बन जाता है और देवव्रत के बाद कट्टरपंथियों की एक नयी जमात खड़ा कर देता है।

उधर सिक्ख लोग भी आक्रमण की तैयारी में जुटे हुए हैं। ये सिक्खलोग एक लम्बे वरामदे में इकट्ठे हो रहे थे। ग्रंथी की कोठरी में भी इनका जमावड़ा हो रहा था। गाँव में सात गुरु सिक्खों के पास दोनाली बन्दूकें थी। उनके पास पाँच बक्से में जिन्दा कारतूस भी थे। जत्थेदार किशन सिंह सुरक्षा के प्रबन्ध में जुटे हुए थे। सभी काफी जोश–खरोश में थे। किसी अनहोनी की आशंका मालूम पड़ रही थी। मुसलमानों की उग्रता का चित्रण करते हुए उपन्यासकार का कथन है–'हर छज्जेवाले शेखों के मकान में कस्बे के मुसलमान असलहे इकट्ठे कर रहे थे। यहाँ पर गाँव के सभी मुसलमान किसान, तेली नानबमई, अब मुजाहिद बन गए थे, फकीरों के खिलाफ जिहाद की तैयारियाँ चल रही थी। आँखों में यहाँ भी खून उतर आया था और कुर्बानी का जज्बा दिलों में लहरें मार रहा था।'[4]

धार्मिक कट्टरता और जातिवाद कितना खतरनाक और संहारक होता है, इसे भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है। ऐसी बात नहीं कि इस भीषण रक्तपात को रोकने की कोशिश नहीं की गई। कम्युनिस्ट कार्यकर्ता देवव्रत, सदहन सिंह, और मीरदाद ने इस खून–खराबा को रोकने का

भरसक प्रयास किया तथा सामाजिक एकता और वन्धुत्व की स्थापना के लिए काफी चेष्टा की, मगर स्थिति ऐसी भयावह हो चुकी थी। उन लोगों के सारे प्रयास विफल हो गये। सभी सम्प्रदाय के लोग शांति की स्थापना के लिए एक–दूसरे की भावना को समझ रहे थे, मगर धार्मिक उन्माद इस प्रकार परवान पर चढ़ चुका था कि सामनेवाले से समझौता करना अपनी तौहिनी समझते थे, अपनी हार समझते थे। काँग्रेसी लोग और कम्युनिस्ट के साथ–साथ जनता भी अँग्रेजों की चाल खूब समझ रही थी जिसकी नीति–फूट डालो और राज करो। तभी तो समझदार और अनुभवी बूढ़ा करीमखान कहता है–'हाकिमों के मन को थाह पाना आम आदमी के बस की बात नहीं है। हाकिम दूर की सोचता है, उसके हर फैसले के पीछे दूरदर्शिता पाई जाती है, जो कुछ वह देखता है उसे आम इंसान नहीं देख पाता।'[5] अँग्रेजों ने अपने मन में खोट रखकर दंगा को रोकने का खूब नाटक किया। यह नाटक देख वख्शीजी व्यंग भरे शब्दों में कहते हैं–'फिसाद, रोटी देनेवाला भी अँग्रेज, घर से बेघर करनेवाला भी अँग्रेज, फिर बाजी ले गया अँग्रेज।'[6]

इतना होने पर भी सम्पन्न हिन्दू और मुसलमान आपसी मित्रता में आँच नहीं आने देते। उनकी दोस्ती बरकरार रहती है। शहनवाज और रघुनाथ क्रमशः ऐसे ही मुसलमान और हिन्दू हैं। यद्यपि शहनवाज हिन्दुओं के प्रति घृणा का भाव रखता है, तथापि वह रघुनाथ के प्रति कोई अपशब्द नहीं बोलता, मगर उसके नौकर मिल्सी पर तो क्रोध दिखाता ही है जो उसके घर की रखवाली करता है। शहनवाज अपने मित्र रघुनाथ से कहता है कि मिल्सी की बातें टूट गयी है, इसलिए इसे तुम्हारे ही पास रख जाना चाहता हूँ, मगर रघुनाथ–दंपती इसे अपने लिए सिर–दर्द मानता है। आखिर शहनवाज उसे अपने ही यहाँ ले जाता है। 'घृणित स्वार्थ के इस विन्दु पर साम्प्रदायिकताग्रस्त समाज की खोखली और स्वयंसेवी आध्यात्मिकता भी नंगी हो जाती है। साथ ही उच्चवर्गीय गठजोर पर आधारित समाज की समाजछाह संबंधी थोथी संकल्पना का राज भी उद्घाटित हो जाता है।'[7]

भीष्म साहनी जब 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु को गाँव और कस्वे की ओर ले जाते हैं तो साम्प्रदायिक रोग से ग्रस्त और त्रस्त हिन्दू–मुसलमान दोनों ही विडम्बनापूर्ण यथार्थ से परिचित हो जाते हैं। चाय की दुकान करनेवाले हरमान सिंह और खेत में काम करनेवाली उसकी पत्नी को बेघर कर दिया जाता है। अपने धर्म के प्रति कट्टर तेजा सिंह पंथ की रक्षा के लिए गरीब सरदारों को तैनात करते हैं। वे इन सबको पंथ के रक्षार्थ कुर्वान हो जाने के लिए उकसाते हैं। इस पर वे सभी गरीब तैयार हो जाते हैं। 'परन्तु जब तुर्कों से समझौते के क्रम में सभी औरतों के जेवरात उतरवाने पर उतावले हो जाते हैं, जबकि उनके पास स्वयं इतना धन रहता है कि इतनी रकम अकेले दें सकते थे।'[8] एक सिक्ख से जब न रहा गया तो

वह तेजा सिंह से कह उठता है–'देना चाहें तो लाख आप अकेले दे सकते हैं। तेजा सिंह जी, आपने बड़ी माया इकट्ठी की है।'[9] मगर तेजा सिंह ने उस सिक्ख की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। यही वह स्थल है जहाँ उपन्यासकार ने इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि कट्टरपंथी लोग अपने धर्म को लेकर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं कर सकते।

सच्चा साहित्य शाश्वत होता है, वह युग–युग के लिए प्रासंगिक होता है। 'तमस' उपन्यास की प्रासंगिकता है कि स्वतंत्रता–प्राप्ति के पूर्व यहाँ के लोग अँग्रेज हाकिमों द्वारा फूट डालने की नीति को बढ़ावा दिया जाता है और फिर शांति–व्यवस्था कायम करने के लिए वे छद्म मसीहा बनकर आते हैं। अँग्रेजों ने परतंत्र भारत में प्रायः यही दोरंगी नीति अपनाई। दुनिया के सामने उन्होंने यह प्रदर्शित करने का स्वांग रखा कि उनके सिवा हिन्दुस्तान का अन्य हितैषी है ही नहीं क्योंकि वे यहाँ के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधना चाहते हैं और उनमें प्रेम, सौहार्द्र तथा वंधुत्व की भावना का संचार करना चाहते हैं। इस चाल को अच्छी तरह जाननेवाली लीजा कहती है– 'मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं, और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।'[10]

रिचर्ड ने ही अपने कारिन्दे मुरादअली को सूअर मरवाकर मस्जिद के द्वार पर फेंकने की साजिश रची थी। जब नर–संहार शुरु हो जाता है तो बोकर स्वयं अपने को पर्दे के पीछे ही रखता है। जब उसकी नीति सफल हो जाती है और उसकी मंशा पूरी हो जाती है तो वह शांति दूत के रूप में पुनः आता है। इसी समय हवाई जहाज की गड़गड़ाहट होती है। अँग्रेज सैनिक हवाई जहाज में बैठे–बैठे हाथ हिला रहे हैं। इसी समय किशन सिंह ने उन सबको सैलूट मारा। किशन सिंह के इस सैलूट का जबाव गोरे सैनिकों ने हाथ हिलाकर दिया, मगर मुसलमानों का अभिवादन कर उन सबने हाथ हवाई जहाज के भीतर कर लिया। लोगों को सांत्वना देने के लिए शांत–समिति और रिलीफ–समिति का गठन होता है। मगर मनोहर लाल अँग्रेजों की चाल समझकर कहता है कि अमन–चैन कैसा? अमन तो तुम्हारे साहब ने अपने पास रख लिया। दंगा–फसाद करा देने के बाद अमन का यह कैसा नाटक खेला जा रहा है।

जो मुरादअली इस दंगे का कारण था, वही बस की अगली सीट पर बैठकर अमन–चैन स्थापित करने का अभियान चला रहा था। शांति–समिति के सदस्य लोग रजिस्टर खोलकर केवल आँकड़ा चाह रहे थे कि कितने गरीब मरे, कितने धनी मरे, कितने हिन्दू मरे और कितने मुसलमान मरे? मगर यह इससे उन लोगों को कोई वास्ता न था। जरा सोचकर देखा जाय तो पता चलेगा कि

साम्प्रदायिक दंगे में अधिकतर गरीब ही मरते हैं। 'शहनवाज जैसे रईस मुसलमान, रघुनाथ जैसे खाते–पीते हिन्दू और तेजा सिंह जैसे रईस मुखिया सरदान इन सारे दंगों में बेदाग होकर बच जाते हैं। लेकिन क्या वे बच पाते हैं? शायद नहीं।

यहाँ हम यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि 'इतिहास की साहित्य में पुनर्रचना की आवश्यकता है, जिसे भीष्मजी ने 'तमस' में बहुत हद तक पुरा किया है। एक ओर अँग्रेज अधिकारी का निर्दय और अमानवीकृत रवैया है, जो भारतीय जनता के मानवीय अस्तित्व को भी कुछ–कुछ और कुछ नहीं के बीच मानता है। रिचर्ड और लीजा सेक्सुअल क्षणों में भारतीय खानसामे की उपस्थिति को कोई महत्त्व नहीं देते और खानसामे की यह मानवीय उपस्थित उनके एकांत को भंग नहीं करती, जैसे खानसामा मनुष्य न हो, कोई पालतू जानवर हो, जो कमरे में उपस्थित हो गया हो।'[11] इतना ही नहीं, 'अँग्रेज हाकिम का यही दृष्टिकोण कुएँ में औरतों और बच्चों के डूब जाने की घटना को महज अपने कौतुहल का एक नया विषय मानने में प्रकट होता है। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि 'तमस' मानवतावादी अद्यतन दर्शन की सीमाओं का अतिक्रमण कर साम्प्रदायिकता की समस्या और उससे संपृक्त विचारधारात्मक संदर्भ को नए और वैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ व्याख्यायित करता है। जितना कुछ इस उपन्यास में वर्णित है, वह महत्त्वपूर्ण और समसामयिक है।

इस प्रकार भीष्म साहनी लिखित 'तमस' उपन्यास का अपना अलग ही वैशिष्ट्य है। उपन्यास–कला की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नन्दाणीया अरजण वी : भीष्म साहनी के कथा–साहित्य का अध्ययन, सं0 2010, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, पृ0 सं0 100.
2. भीष्म साहनी : तमस, पृ0 सं0 69.
3. वही : पृ0 सं0 171.
4. वही : पृ0 सं0 215.
5. वही : पृ0 सं0 223.
6. भीष्म सहनी : तमस, पृ0 सं0 213.
7. नन्दाणीया अरजण वी : भीष्म साहनी के कथा–साहित्य का अध्ययन, सं0 2010, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, पृ0 सं0 103.
8. वही : पृ0 सं0 103.

9. भीष्म सहनी : तमस, पृ0 सं0 44.
10. वही : पृ0 सं0 216.
11. नन्दाणीया अरजण वी : भीष्म साहनी के कथा–साहित्य का अध्ययन, सं0 2010, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, पृ0 सं0 105.

*****